मैत्रावरुणर्वसिष्ठः।इन्द्रः। त्रिष्टुप्।

**आ ते॑ म॒ह इ॑न्द्रो॒त्युग्र॒ सम॑न्यवो॒ यत्स॒मर॑न्त॒ सेनाः॑।**
**पता॑ति दि॒द्युन्नर्य॑स्य बा॒ह्वोर्मा ते॒ मनो॑ विष्व॒द्य१ग्वि चा॑रीत्॥ ७.०२५.०१**

उग्र- उद्गूर्ण। इन्द्र। महः- महतः। ते- तव। समन्यवः- समननाः सक्रोधा वा। सेनाः। आ- समन्तात्। समरन्त- सङ्गताः। नर्यस्य- नरहितस्य। ते। बाह्वोः- भुजयोः। दिद्युत्- त्वत्प्रहरणम्। पताति- पतति। ते- तव। मनः- चित्तम्। विष्वद्यक्- सर्वत्र गन्तृ सत्। मा। वि चारीत्- विविधं चरतु। एकाग्रेण भवत्विति भावः॥१॥

**नि दु॒र्ग इ॑न्द्र श्नथिह्य॒मित्राँ॑ अ॒भि ये नो॒ मर्ता॑सो अ॒मन्ति॑।**
**आ॒रे तं शंसं॑ कृणुहि निनि॒त्सोरा नो॑ भर स॒म्भर॑णं॒ वसू॑नाम्॥ ७.०२५.०२**

इन्द्र- हे ईशनाधिदैवत। दुर्गे- युद्धे। ये। मर्तासः- मर्त्याः। अभि- आभिमुख्येन। नः- अस्मान्। अमन्ति- अभिभवन्ति। तान्। अमित्रान्- शत्रून्। नि- नितराम्। श्नथिहि- जहि। निनित्सोः- निन्दितुमिच्छोः। तम्- तत्। शंसम्- दुर्वचनम्। आरे- दूरे। कृणुहि- कुरु। नः- अस्मभ्यम्। वसूनां सम्भरणम्- सम्पत्समूहम्। आभर- आहर॥२॥

**श॒तं ते॑ शिप्रिन्नू॒तयः॑ सु॒दासे॑ स॒हस्रं॒ शंसा॑ उ॒त रा॒तिर॑स्तु।**
**ज॒हि वध॑र्व॒नुषो॒ मर्त्य॑स्या॒स्मे द्यु॒म्नमधि॒ रत्नं॑ च धेहि॥ ७.०२५.०३**

शिप्रिन्- हनुमन्। सुदासे- तव शोभनदायके। शतम् ऊतयः- प्रभूतरक्षाः सन्तु। सहस्रं शंसाः- अनन्तस्तुतयः सन्तु। उत- अपि च। रातिः- दानम्। अस्तु- भवतु। वनुषः- हिंसकस्य। मर्त्यस्य- मनुष्यस्य। वधः- प्रहरणम्। जहि- बाधस्व। अस्मे- अस्मभ्यम्। द्युम्नम्- ज्योतिः। रत्नम्। च। अधि धेहि- धारय यच्छ वा॥३॥

**त्वाव॑तो॒ हीन्द्र॒ क्रत्वे॒ अस्मि॒ त्वाव॑तोऽवि॒तुः शू॑र रा॒तौ।**

Dr. Rangaji

**विश्वेदहानि तविषीव उग्रँ ओकः कृणुष्व हरिवो न मर्धीः॥ ७.०२५.०४**

हरिवः- प्राणतुरगसम्पन्न। उग्र- उद्गूर्ण। तविषीवः- बलिन्। इन्द्र- परमेश्वर। त्वावतः- त्वद्विधस्य। क्रत्वे- सङ्कल्पे। अस्मि- भवामि। शूर- समर्थ। त्वावतः- त्वद्विधस्य। अवितुः- रक्षितुः। रातौ- दाने भवामि। विश्वा अहानि- सर्वेष्वहःसु। ओकः- अस्माकं सद्म। कृणुष्व- कुरु। न मर्धीः- मा हिंसीः ॥४॥

**कुत्सा एते हर्यश्वाय शूषमिन्द्रे सहो देवजूतमियानाः।**

**सत्रा कृधि सुहना शूर वृत्रा वयं तरुत्राः सनुयाम वाजम्॥ ७.०२५.०५**

इन्द्रे। देवजूतम्- देवप्रेरितम्। सहः- बलम्। इयानाः- याचमानाः। एते- इमे। हर्यश्वाय- प्राणाश्वायेन्द्राय। शूषम्- सुखम्। कुत्साः- कुर्वाणाः। करोतेः कुत्सशब्दनिष्पत्तिरिति सायणः। वयम्। तरुत्राः- भवदनुग्रहेण तीर्णाः। वाजम्- सद्गतिम्। सनुयाम- लभेमहि। शूर- समर्थ। सत्र- सहैव। वृत्रा- आवरणानि। सुहना- सुलभतया हन्तव्यानि। कृधि- कुरु ॥५॥

**एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम।**

**इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७.०२५.०६**

पूर्वं व्याख्यातम् (७.०२४.०६) ॥६॥

Dr. Ranganji